पाठ - 11 : बिहारी

मुख्य भाव

बिहारी रीतिकाल के सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रतिनिधि कवि हैं। उन्होंने शृंगार, भक्ति, नीति और प्रकृति-चित्रण से संबंधित अत्यंत सुंदर दोहों की रचना की है। शृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का चित्रण करते समय बिहारी ने नायक-नायिका की दैनिक गतिविधियों को चुना है। कृष्ण उनके काव्य में शृंगार के नायक के रूप में भी उपस्थित हैं। बिहारी ने प्रकृति के कोमल और रुचिकर रूपों के साथ-साथ उसके प्रचंड रूपों का भी सुंदर वर्णन किया है।

प्रमुख विशेषताएं

दोहा – 1 : कवि कहता है कि मैं कब से तुम्हें दीन स्वर में पुकार रहा हूँ अर्थात् कितने लंबे समय से अपने दुखों का निवारण करने के लिए तुम्हारा स्मरण कर रहा हूँ, पर हे श्रीकृष्ण! तुम मेरी सहायता नहीं करते, मेरे दुखों को दूर नहीं करते। हे! सारी दुनिया के गुरु और हे!

जगत के स्वामी, लगता है कि तुम्हें भी इस संसार की हवा लग गई है। जैसे इस दुनिया में सब लोग अपने आप में मस्त रहते हैं, कोई किसी के दुख में हाथ नहीं बँटाता और अपनी प्रशंसा और प्रभुता का आनंद लेता रहता है, ऐसा ही तुम भी कर रहे हो।

दोहा - 2 : श्रीकृष्ण के कानों में मकर (मगरमच्छ) की आकृति के कुंडल शोभायमान हो रहे हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो कामदेव ने उनके हृदय रूपी घर में प्रवेश करके उसे जीत लिया है। यानी उसने कृष्ण के हृदय पर अपना कब्जा जमा लिया है और उनके कानरूपी द्वार पर विजय का प्रतीक यह ध्वज लहरा रहा है। अर्थात् नायक के रूप-सौंदर्य के विषय में सुनकर नायिका के हृदय में उसके प्रति प्रेम का अंकुरण हो गया है।

दोहा - 3 : बिहारी ने नायिका/नायक की याद में डूबे हुए नायक/नायिका का वर्णन किया है। विरहग्रस्त नायक या नायिका अपने सखी या सखा से अपनी मनोदशा का वर्णन करता/करती है- जब-जब मुझे अपने प्रिय की याद आती है तो मैं अपनी सुधबुध भूल जाती हूँ। यानी उनका स्मरण करते ही मैं अपनी सारी चेतना, सारी सुधबुध गँवा बैठती हूँ। मेरी आँखें उसकी आँखों में ही उलझी रहती हैं। अर्थात् मेरा ध्यान उसकी आँखों में ही लगा रहता है, फलस्वरूप मुझे नींद भी नहीं आती। यह अर्थ नायिका के पक्ष में है। इसी तरह, इसके विपरीत नायक के पक्ष में भी यही अर्थ किया जा सकता है।

दोहा - 4 : कवि ने अचानक धन प्राप्त होने वाले व्यक्ति के नशे का वर्णन किया है। कवि कहता है यह नशा मादक पदार्थों के सेवन से होने वाले नशे से सौ गुना अधिक खतरनाक होता है। सोने में धतूरे से सौगुना अधिक नशा होता है, क्योंकि धतूरे के तो खाने से आदमी मदहोश होता है जबकि सोने के मिलने पर उसकी स्थिति इससे भी बुरी हो जाती है, अर्थात् धन की मादकता इसलिए अधिक है क्योंकि उसका प्राप्त होना ही सिर चढ़कर बोलने लगता है, जबकि मादक द्रव्य तो सेवन करने पर ही। अतः धन का नशा अन्य सभी नशों से अधिक और ख़तरनाक होता है। मादक पदार्थों का नशा उन्हें सेवन करने के कुछ समय बाद उतर जाता है किंतु सोने (धन) का नशा बना ही रहता है और जीवन की अन्य गतिविधियों पर उसका चढ़ा हुआ रंग तरह-तरह से दिखाई देता है।

दोहा - 5 : कोई गोपी अपनी सखी से कहती है कि उस यमुना के तट पर पहुँचकर मेरा मन आज भी वही, वैसा ही हो जाता है। वहाँ घने कुंजों की छाया अत्यंत सुखदायी लगने लगती है तथा सुगंधित वायु बहुत शीतलता प्रदान करने लगती है। आप जानते हैं कि कृष्ण गोकुल में सभी गापियों को बहुत प्रसन्न रखते थे। बाद में जब वे गोकुल छोड़कर मथुरा चले गए तब सभी गोपियाँ उनकी याद में बहुत दुखी रहती थीं। परंतु जब भी वे कृष्ण को, उनकी पुरानी बातों को याद

करती हैं तब कुछ समय के लिए ख़ुश हो जाती थीं। उसे यमुना के तट पर पहुँचकर कृष्ण की केवल याद भर नहीं आती, जो कलेजे को टीस पहुँचाए और छाया भी जलाने वाली नहीं लगती, सुगंधित हवा भी तन-मन को विरह ताप से झुलसाने वाली नहीं लगती; बल्कि यमुना-तट की ये स्मृतियाँ इतनी सघन, सुखद और मधुर हैं कि वे उसे 'आज' से मुक्त करती हैं और उसके दिल-दिमाग को उसी काल खंड में ले जाती हैं जब वह उमंग और उल्लास से भरी कृष्ण के साथ होती थी।

दोहा - 6 : गोपियों को कृष्ण से बात करना अच्छा लगता है, कोई एक उनकी बाँसुरी को छिपा देती है, कृष्ण उसे कसम देते हैं तो वह भौंहों में मुस्कराती है, वापस देने की बात कहकर फिर मुकर जाती है। यहाँ प्रेम के विविध रूप दिखाई देते हैं और अनुभावों का सुन्दर चित्रण हुआ है। बिहारी के दोहे की इस पंक्ति में गोपियाँ एक दूसरे से बातचीत करते हुए कह रहीं हैं कि हे सखी! हमने श्री कृष्ण से बात करने के लालच में उनकी मुरली छुपा ली है, ताकि उनका पूरा ध्यान हम पर रहे और हम उनसे प्रेम भरी बातें कर के सुख प्राप्त कर सकें। श्री कृष्ण तरह-तरह की कसमें देकर उनसे मुरली के बारे में पूछते हैं, लेकिन वे नहीं बताती। फिर जब श्री कृष्ण को यकीन हो जाता है कि गोपियों को मुरली के बारे में नहीं पता है, तब वे अपनी भौहें टेडी कर के हँसने लग जाती हैं। इस कारण, श्री कृष्ण को फिर से गोपियों पर संदेह हो जाता है।

दोहा - 7 : बिहारी जी ने ग्रीष्म ऋतु की भयंकर गर्मी का वर्णन किया है। वे यहाँ कहते हैं कि जंगल में पड़ रही भयंकर गर्मी के कारण एक-दूसरे की जान के प्यासे जंगली जानवर, जैसे - बाघ, सांप, मोर, हिरन आदि आपसी शत्रुता भूलकर तपस्वियों की तरह शांति से एक साथ रह रहे हैं।

भाषा एवं शैली

- बिहारी ने अपनी समस्त रचनाएँ दोहा छंद में की हैं और उनकी भाषा ब्रजभाषा है। प्रायः समस्त रीतिकाव्य ब्रजभाषा में ही रचा गया है। अपने माधुर्य के कारण ब्रजभाषा शृंगार और प्रकृति-चित्रण के लिए उपयुक्त भी है।
- बिहारी के भाषा-प्रयोग में बहुत व्यापकता है।
- संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों से लेकर आम बोलचाल के शब्दों तक का प्रयोग उन्होंने किया है।
- लोक में प्रचलित मुहावरों का अत्यंत सटीक प्रयोग उनकी काव्य-भाषा की विशेषता है।
- सबसे अधिक सराहनीय है, उनकी भाषा की लाक्षणिकता यानी सामान्य से लगने वाले वर्णन में निहित अर्थ-चारुत्व और अनेक अर्थों की संभावना।

अपना मूल्यांकन कीजिए

- बिहारी की श्रृंगार भावना का वर्णन कीजिए।
- 'बिहारी ने गागर में सागर भर दिया है।' सोदाहरण इस कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
- बिहारी के प्रकृति चित्रण का उल्लेख कीजिए